दुःख का अधिकार

लेखक - यशपाल

प्रश्न उत्तर

प्रश्न 1: मनुष्य के जीवन में पोशाक का क्या महत्व है?

उत्तर: हमारी पोशाक हमें समाज में एक निश्चित दर्जा दिलवाती है। पोशाक हमारे लिए कई बंद दरवाजे खोलती है अर्थात हमें अनेक अवसर उपलब्ध करवाती है| कभी-कभी वही पोशाक हमारे लिए अड़चन भी बन जाती है।

प्रश्न 2: पोशाक हमारे जीवन के लिए कब बंधन और अड़चन बन जाती है?

उत्तर: कभी कभार ऐसा होता है कि हम नीचे झुककर समाज की निचली श्रेणियों के लोगों के दर्द को जानना चाहते हैं। ऐसे समय में हमारी पोशाक अड़चन बन जाती है क्योंकि अपनी पोशाक के कारण हम झुक नहीं पाते हैं अर्थात् समाज के डर से हम निम्न वर्ग के लोगों के दुःख में शामिल नहीं हो पाते| हमें यह डर सताने लगता है कि आस-पास के लोग क्या कहेंगे।

प्रश्न 3: लेखक उस स्त्री के रोने का कारण क्यों नहीं जान पाया?

उत्तर: लेखक संभ्रांत वर्ग का व्यक्ति था| उसने अपनी संपन्नता के हिसाब से पोशाक पहनी हुई थे। इसलिए वह झुककर या उस बुढ़िया के पास बैठकर उससे बातें करता या उसके दुःख का कारण जानने का प्रयास करता तो लोग तरह-तरह की बातें बनाते। इसलिए वह उस स्त्री के रोने का कारण नहीं जान पाया। पोशाक ही उस बुढ़िया के दुःख को जानने के मध्य बाधा बन गई थी|

प्रश्न 4: भगवाना अपने परिवार का निर्वाह कैसे करता था?

उत्तर: भगवाना शहर के पास में ही डेढ़ बीघा जमीन पर कछियारी करके अपने परिवार निर्वाह करता था। वह उस जमीन में खरबूजे उगाता था। वहाँ से वह खरबूजे तोड़कर लाता था और बेचता था। कभी-कभी वह स्वयं खरबूजे की डलिया बाज़ार ले जाकर स्वयं खरबूजे बेचता था और कभी उसकी माँ बिक्री के लिए बैठती थी।

प्रश्न 5: लड़के की मृत्यु के दूसरे ही दिन बुढ़िया खरबूजे बेचने क्यों चल पड़ी?

उत्तर: लड़के के इलाज करने में बुढ़िया की सारी जमा-पूँजी समाप्त हो गई थी। जो कुछ बचा था वह लड़के के अंतिम संस्कार में खर्च हो गया। अब लड़के के बच्चों की भूख मिटाने के लिए यह जरूरी था कि बुढ़िया कुछ कमाकर लाए। परिवार के इकलौता कमाऊ सदस्य की मृत्यु हो जाने के कारण अब बुढ़िया को कोई उधार भी नहीं देता| उसकी बहू भी बीमार थी। इसलिए लड़के की मृत्यु के दूसरे ही दिन बुढ़िया को खरबूजे बेचने के लिए निकलना पड़ा।

प्रश्न 6: बुढ़िया के दुख को देखकर लेखक को अपने पड़ोस की संभ्रांत महिला की याद क्यों आई?

उत्तर: बुढ़िया के दुख को देखकर लेखक को अपने पड़ोस की संभ्रांत महिला की याद इसलिए आई कि उस संभ्रांत महिला के पुत्र की मृत्यु पिछले साल ही हुई थी। पुत्र के शोक में वह महिला ढ़ाई महीने बिस्तर से उठ नहीं पाई थी। उसकी तीमारदारी में डॉक्टर और नौकर लगे रहते थे। शहर भर के लोगों में उस महिला के शोक मनाने की चर्चा थी। दोनों महिलाओं का दुःख सामान था, दोनों ही पुत्र वियोगिनी थीं|

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 50 – 60 शब्दों में लिखिए:

प्रश्न 1: बाज़ार के लोग खरबूजे बेचनेवाली स्त्री के बारे में क्या-क्या कह रहे थे? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर: बाजार के लोग खरबूजे बेचनेवाली स्त्री के बारे में तरह तरह की बातें कर रहे थे। कोई कह रहा था कि बेटे की मृत्यु के तुरंत बाद बुढ़िया को बाहर निकलना ही नहीं चाहिए था। कोई कह रहा था कि सूतक की स्थिति में वह दूसरे का धर्म भ्रष्ट कर सकती थी इसलिए उसे नहीं निकलना चाहिए था। किसी ने कहा, कि ऐसे गरीब लोगों के लिए रिश्तों नातों की कोई अहमियत नहीं होती। वे तो केवल रोटी को अहमियत देते हैं। अधिकांश लोग उस स्त्री को तिरस्कार की नजर से देख रहे थे।

प्रश्न 2: पास-पड़ोस की दुकानों से पूछने पर लेखक को क्या पता चला?

उत्तर: पास-पड़ोस की दुकानों से पूछने पर लेखक को उस बुढ़िया के दुख के बारे में पता चला। लेखक को पता चला कि बुढ़िया का इकलौता बेटे की साँप के काटने से मृत्यु हो गई थी। बुढ़िया के घर में उसकी बहू और पोते-पोती रहते थे। बुढ़िया सारी जमा-पूंजी, छोटे-मोटे जेवर व घर का सारा आटा-अनाज बेटे के इलाज और उसके अंतिम संस्कार में खर्च हो गया था। अगले दिन सुबह जब उसके पोते भूख से बिलखने लगे तो बुढ़िया ने उन्हें खरबूजे खाने को दे दिए परन्तु उसकी बहू को तेज बुखार था इसलिए उसके इलाज व खाने का प्रबंध करने के लिए बुढ़िया को खरबूजे बेचने के लिए घर से बाहर निकलना पड़ा था।

प्रश्न 3: लड़के को बचाने के लिए बुढ़िया ने क्या-क्या उपाय किए?

उत्तर: बुढ़िया एक ग्रामीण व अनपढ़ महिला थी अतः लड़के को बचाने के लिए बुढ़िया ने जो उचित समझा वह किया। उसने झटपट ओझा को बुलाया। ओझा ने झाड़फूँक शुरु की। ओझा को दान-दक्षिणा देने के लिए बुढ़िया ने घर में जो कुछ था दे दिया। घर में नागदेव की पूजा भी करवाई परन्तु फिर भी उसका बेटा नहीं बच पाया|

प्रश्न 4: लेखक ने बुढ़िया के दुख का अंदाजा कैसे लगाया?

उत्तर: लेखक ने बुढ़िया के दुख का अंदाजा लगाने के लिए बुढ़िया की तुलना अपने पड़ोस में रहने वाली एक संभ्रांत महिला के दुःख से की जिसने एक वर्ष पूर्व अपना पुत्र खोया था| अपने पुत्र की मृत्यु के बाद वह संभ्रांत महिला वह ढाई मास तक पलंग पर पड़ी रही अपने पुत्र की याद में हर पन्द्रह मिनट में मूर्छित हो जाती थी, दो–दो डॉक्टर उसके सिरहाने बैठे रहते थे और उसके माथे पर बर्फ़ की पट्टी रखी जाती थी| इस निर्धन बुढ़िया ने भी अपना जवान पुत्र खोया था| अतः लेखक ने अंदाज़ा लगाया कि उस खरबूजे बेचने वाली बुढ़िया का हृदय भी पुत्र-वियोग से उतना ही व्यथित होगा जितना उस संभ्रांत महिला का था|

प्रश्न 5: इस पाठ का शीर्षक 'दुख का आधिकार' कहाँ तक सार्थक है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: 'दुःख का अधिकार' पाठ में लेखक यशपाल यह अभिव्यक्त करते हैं कि ईश्वर ने बिना भेदभाव दुःख और दुःख से होने वाली पीड़ा प्रत्येक व्यक्ति को सामान रूप से दी है लेकिन परिस्थितिवश जहाँ अमीर

व्यक्ति के पास दुःख की घडी से उबरने के लिए पर्याप्त साधन व समय होता है वहीं गरीब व्यक्ति अपनी विवशता के कारण दुःख मना भी नहीं पाता। इस बात को स्पष्ट करने के लिए लेखक ने गरीब बुढ़िया और संभ्रांत महिला का उदाहरण दिया है । दोनों महिलाओं का दुख एक समान ही था। दोनों के पुत्रों की मृत्यु हो गई थी परन्तु संभ्रांत महिला के पास सहूलियतें थीं, समय था। वह ढाई मास तक पलंग पर पड़ी रही अपने पुत्र की याद में हर पन्द्रह मिनट में मूर्छित हो जाती थी, दो–दो डॉक्टर उसके सिरहाने बैठे रहते थे और उसके माथे पर बर्फ़ की पट्टी रखी जाती थी | सारे शहर के लोगों के मन में उस महिला के दुःख को देखकर उसके प्रति करुणा का भाव था| परन्तु बुढ़िया गरीब थी, उसे अपनी बीमार बहू के इलाज तथा भूख से बिलखते बच्चों के लिए पैसा कमाने हेतु खरबूजे बेचने जाना पड़ा । उसके पास न सहूलियतें थीं न ही समय की वह अपने पुत्र की मृत्यु का शोक मना सके|उसे दु:ख मनाने का अधिकार नहीं था। अत: यह शीर्षक यह व्यक्त करता है कि दुःख मनाने का अधिकार सभी को नहीं है |अतः शीर्षक कथानक के अनुरूप है इसलिए शीर्षक पूरी तरह सार्थक प्रतीत होता है।

निम्नलिखित के आशय स्पष्ट कीजिए:

प्रश्न 1: जैसे वायु की लहरें कटी हूई पतंग को सहसा भूमि पर नहीं गिर जाने देतीं उसी तरह खास परिस्थितियों में हमारी पोशाक हमें झुक सकने से रोके रहती है।

उत्तर: कोई भी पतंग कटने के तुरंत बाद जमीन पर धड़ाम से नहीं गिरती। हवा की लहरें उस पतंग को बहुत देर तक हवा में बनाए रखती हैं। पतंग धीरे-धीरे वायु की लहरों पर लहराते हुए जमीन की ओर गिरती है। हमारी पोशाक भी हवा की लहरों की तरह काम करती है। कई ऐसे मौके आते हैं कि हम अपनी पोशाक की वजह से झुककर जमीन की सच्चाई जानने से वंचित रह जाते हैं। पोशाक के कारण हमारे मन में अपने उच्च वर्ग के होने का अभिमान उत्पन्न होता है और उस अभिमान को हम सहसा त्याग कर निम्न वर्ग के सुख-दुःख में शामिल नहीं हो पाते| इस पाठ में लेखक अपनी पोशाक की वजह से बुढ़िया के पास बैठकर उससे बात नहीं कर पाता है।

प्रश्न 2: इनके लिए बेटा-बेटी, खसम-लुगाई, धर्म-ईमान सब रोटी का टुकड़ा है।

उत्तर: है। कहानी 'दुःख का अधिकार' पाठ से उद्धृत इस पंक्ति में लेखक यशपाल गरीबों की विवशता तथा उनके प्रति अमीरों के संवेदनहीन व्यवहार के विषय में बताते हैं| यह एक प्रकार का कटाक्ष है जो किसी की गरीबी और उससे उपजी मजबूरी का उपहास उड़ाता है। जो व्यक्ति यह कटाक्ष कर रहा है उसे सिक्के का एक पहलू ही दिखाई दे रहा है। हर व्यक्ति रिश्तों नातों की मर्यादा रखना चाहता है। लेकिन जब भूख की मजबूरी होती है तो कई लोगों को मजबूरी में यह मर्यादा लांघनी पड़ती है। उस बुढ़िया के साथ भी यही हुआ था। बुढ़िया को न चाहते हुए भी खरबूजे बेचने के लिए निकलना पड़ा था।

प्रश्न 3: शोक करने, गम मनाने के लिए भी सहूलियत चाहिए और ... दुखी होने का भी एक अधिकार होता है।

उत्तर: शोक तो ईश्वर बिना भेदभाव सबको देता है पर शोक मनाने की सहूलियत भगवान हर किसी को नहीं देता है। कहानी 'दुःख का अधिकार' पाठ से उद्धृत इस पंक्ति में लेखक यशपाल गरीबों की विवशता तथा उनके प्रति अमीरों के संवेदनहीन व्यवहार के विषय में बताते हैं| जहाँ एक और अमीरों के पास पर्याप्त साधन व सुविधाएँ होती हैं, समय होता है की वे अपने दुःख को मना सकें, वहीं गरीब व्यक्ति के पास पेट भरने और अपने परिवार का पालन करने की ऐसी मजबूरियाँ या जिम्मेदारियाँ आ जाती हैं कि मनुष्य को शोक मनाने का मौका भी नहीं मिलता। यह बात खासकर से किसी गरीब पर अधिक लागू होती है। गरीब

को तो शोक मनाने का अधिकार ही नहीं होता है। (गरीब बुढ़िया और संभ्रांत महिला उदहारण देते हुए उत्तर पूर्ण कीजिए)